IJIRSET
International Journal of Innovative Research in
SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

e-ISSN: 2319-8753 | p-ISSN: 2347-6710

INTERNATIONAL JOURNAL OF INNOVATIVE RESEARCH

IN SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

Volume 12, Issue 2, February 2023

INTERNATIONAL
STANDARD
SERIAL
NUMBER
INDIA

Impact Factor: 8.118

|e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 12, Issue 2, February 2023 ||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2023.1202085 |

रमेश बख्शी कृत देवयानी का कहना है : दिशाहीन विद्रोह

डॉ० मोनिका नरेश

एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग,

दयानन्द महाविद्यालय, हिसार

E-mail: nkmksk@rediffmail.com

सार : ''देवयानी का कहना है'' नाटक एक नवीन प्रयोग है। नायिका का अदम्य साहस व उसकी नवीन विचार धारा चौंका देने वाली है। वह समस्त पूर्ण सिद्धान्तों को, बन्धनों को – वे शुभ हों या अशुभ, मंगलमयी हों या अमंगलमयी, तोड़ फेंकना चाहती है। एक नयी पीढ़ी को अत्याधुनिक नारी का प्रतिनिधित्व करती हुई देवयानी कुछ प्रश्न उठाती है। प्रश्नों के उत्तर कुछ अन्य प्रश्नों को उलझा कर उसे कन्फयूज्ड कर देते हैं। पूर्व पीढ़ी के जीवनयापन के कुछ स्तम्भ थे। उनके पास विश्वास, आस्था, निष्ठा, केन्द्रीयता व एकनिष्ठता की पूँजी थी लेकिन समकालीन पीढ़ी इसे थोथा व घटिया बताती है। देवयानी नाटक में पुरुष का नाम भी प्रतीकात्मक है। ''साधन'' नाम उसकी पात्रगत विशेषता का बोधक है। नई पीढ़ी अपने अनुभव पर जीना चाहती है। किसी के विचारों की बैसाखी पकड़ कर नहीं। वह उन्मुक्त उड़ान भरना चाहती है।

शब्द–कुंजी : देवयानी, रमेश बख्शी, पाश्चात्य प्रभाव, प्रेम, विश्वास

''देवयानी का कहना है'' नाटक एक नवीन प्रयोग है। नायिका का अदम्य साहस व उसकी नवीन विचार धारा चौंका देने वाली है। वह समस्त पूर्ण सिद्धान्तों को, बन्धनों को वे – शुभ हों या अशुभ, मंगलमयी हों या अमंगलमयी, तोड़ फेंकना चाहती है। एक नयी पीढ़ी को अत्याधुनिक नारी का प्रतिनिधित्व करती हुई देवयानी कुछ प्रश्न उठाती है। प्रश्नों के उत्तर कुछ अन्य प्रश्नों को उलझा कर उसे कन्फयूज्ड कर देते हैं।

नाटककार नाटक के मूल कथ्य को प्रतीक रूप में उकेरता है। नाटक के प्रारम्भ में ही कैलेण्डर को कील ठोंक कर दीवार पर टांगा जाता है जो वास्तव में नायक–नायिका के परस्पर सम्बन्ध का प्रतीक है। नाटक की नायिका देवयानी का एकमात्र सत्य है– असन–वसन, आवास और सैक्स। नाटककार ने कैलेण्डर के माध्यम से उसके चरित्र को उकेरा है जो सदैव नवीनता चाहता है। लेकिन यह प्रतीक उस कदर सार्थक नहीं हो सका जैसा लेखक ने चाहा होगा क्योंकि कैलेण्डर तो एक वर्ष तक स्थाई रूप से

|e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 12, Issue 2, February 2023 ||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2023.1202085 |

दीवार पर सुशोभित हो कमरे की शोभा बढ़ाता है और नायक–नायिका का पारस्परिक सम्बन्ध तो कुछ महीनों का भी नहीं, कुछ ही दिनों का है। पूर्व पीढ़ी जिस सम्बन्ध को समझने के लिए सारी ज़िन्दगी लगा देती थी उसे समझने के लिए देवयानी के दो या तीन दिन ही काफी हैं। नाटक का पुरूष पात्र साधन देवयानी से पहले इरा दास, रेखा, स्वामिनाथन और दिशा आदि के सम्पर्क में रह चुका है और देवयानी साधन से पूर्व इतने पुरूषों के सम्बन्ध में रह चुकी है कि उनके नाम तो क्या उनकी संख्या भी भूल चुकी है। ''वे ज़िन्दगी को, शरीर को आज के सन्दर्भ में अर्थ प्रदान करने और यौवन को सार्थक बनाने की चेष्टा करते हैं। दोनों एक–दूसरे से बंधकर जीवन जीना नहीं चाहते क्योंकि पति–पत्नी के बंधन को वे कैद समझते हैं।''[1] वह नित्य नया सेब खाना चाहती है। उसके लिए वह पेड़, बगीचा सब कुछ बदल सकती है। वह यह नहीं सोचती कि इससे वह स्वयं एक बासी सेब बन जाएगी।

पूर्व पीढ़ी के जीवनयापन के कुछ स्तम्भ थे। उनके पास विश्वास, आस्था, निष्ठा, केन्द्रीयता व एकनिष्ठता की पूँजी थी लेकिन समकालीन पीढ़ी इसे थोथा व घटिया बताती है। यन्त्रीकरण व विसंस्कृतिकरण ने मानव को भीड़ में अकेला कर दिया है, वह स्वयं को टूटा हुआ, अकेला, अजनबी महसूस करता है। परिवार टूट चुके हैं, दाम्पत्य सम्बन्ध खण्डित हो चुके हैं। छठे दशक की यह मान्यता है कि ''विवाह किसी भी स्थिति में उपेक्षणीय नहीं माना जा सकता। विवाह ही है जो हमें संसार में पहुँचने का रास्ता देता है''[2], आज मान्य नहीं है। खण्डित दाम्पत्य सम्बन्धों के मध्य तीसरा आदमी आया है जो आधुनिक जीवन की सबसे बड़ी त्रासदी है। ओक्काक और शील के मध्य उपपति के रूप में तीसरे आदमी का आगमन हुआ, तो मल्लिका और कालिदास के मध्य विलोम कभी तीसरा आदमी बना, तो कभी परिस्थितियों के भंवर ने कालिदास को तीसरा आदमी बना दिया। लेकिन इस तनाव के बावजूद भी पति–पत्नी एक साथ चिपके रहने को मज़बूर हैं। टूटे सम्बन्धों की लाश ढोने के लिए बाध्य हैं। तीसरा आदमी जहाँ भी आया अयाचित रूप में नहीं, याचित रूप में आया है। उसका स्वर विद्रोह का नहीं, संवेदना का था। देवयानी के पिता बीस साल से लड़खड़ा रहे हैं, पच्चीस साल से सिर फोड़ रहे हैं। ''तिवारी और तिवारिन जी का साल भर तक अबोला रहा– एक शब्द वे बोलें तो थे।''[3] लेकिन फिर भी वे एक साथ जी रहे हैं। जीवन की गाड़ी को चला रहे हैं। यह मनोवैज्ञानिक सत्य है कि बाप–माँ के क्रिया–कलाप का प्रभाव उनकी संतान पर अवश्य पड़ता है। देवयानी को इस ढंग से जीना, बोझ ढोना, सम्बन्धों के बंधन में अपने जीवन को समाप्त कर देना, 'हाय! लोग क्या कहेंगे?' यही सोच–सोच कर अपनी अनमोल यौवन की घड़ियों को यों ही गवां देना अकलमंदी नहीं मानती। यही विचार देवयानी के दिमाग में घुन की तरह घुस गया। उसने समाज के बंधनों, परम्पराओं को तोड़ फैंकने का निश्चय किया। इन बन्धनों को

|e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 12, Issue 2, February 2023 ||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2023.1202085 |

तोड़ खग की भान्ति स्वछन्द खुले आसमान में दीन–दुनियाँ से बेखबर उड़ना चाहती है। अलग–अलग दिशाओं में अनेकों सम्बन्ध स्थापित करती हुई जब वह सम्बन्ध किसी सामाजिक मूल्य के साथ जुड़ते हैं तो उन्हें निर्ममता से तोड़कर नए बिन्दु तलाशती है। ''विवाह'' संस्था से उसे नफरत है। विवाह को अस्वीकार कर वह नित्य नए बिन्दु तलाशती है। उनसे जुड़ती है टूटने के लिए, पुनः टूटती है कहीं और जुड़ने के लिए। वह साधन के साथ बिना विवाह किए होटल के एक ही कमरे में रहती है। फिर इस व्यय से कतरा कर मकान में रहती है। जहाँ सामाजिक मान्यताओं का उसे सामना करना पड़ता है। 'मनुस्मृति', वेद वाक्य, 'धर्मानुसार विवाह' आदि शब्दों का उपहास करती है और अन्ततः घर में रहने के लिए उसे स्वीकार भी करती है। स्पष्ट है कि विवाह सम्बन्धों के प्रति उसके यह भाव मात्र विद्रोह नहीं अपितु माँ–बाप के क्रिया–कलाप के प्रति उसकी प्रतिक्रिया है जो सहज एवं स्वाभाविक है। लेकिन विवाह संस्था को नकारा भी नहीं जा सकता। आज के यांत्रिक परिवेश में विवाह संस्था अपनी महत्ता एवं अस्तित्व को अपनी उपयोगिता के कारण ही कायम रख सकी है। यह मानव के सभ्य एवं सुसंस्कृत होने का प्रमाण है। सृष्टि नर–नारी मय है। आदिम युग में मानव जीवन में ऐसी कोई व्यवस्था नहीं थी। वह अपनी मूल प्रवृत्तियों को स्वछन्द रूप से संतुष्ट करता था। मानव, बुद्धि में विवेक के जागृत होने से जीवन में जहाँ अनेक उलझी तारों की गुच्छियाँ सुलझने लगीख वहीं कई नई समस्याएं भी जन्म लेने लगी। ''विवाह'' व्यवस्था इस क्रम का एक महत्वपूर्ण सोपान है। इससे समाज में वासना के कीड़े नहीं, इन्सान पैदा होते हैं जो रिश्तों की कद्र करते हैं और परस्पर संबंधों को निभाते हैं। लेकिन आज की पीढ़ी का प्रतिनिधित्व करती ''देवयानी उसी संस्था को नकारते हुए शायद पुनः आदिम युग में जीना चाहती है क्योंकि यह मानव प्रकृति का सहज गुण है। वह सदैव परिवर्तन चाहता है। कभी बन्धनों का निर्माण कर और कभी बन्धनों के प्रति विद्रोह कर।

देवयानी स्वयं को अपने भविष्य की नियामक स्वीकारती हुई कहती है ''वह होता कौन है कुछ भी कहने वाला। मैं बालिग हूँ और मुझे अपनी इच्छा से किसी से भी शादी कर लेने का अधिकार है।''[4] वह अपने पर किसी प्रकार के बन्धन को स्वीकार नहीं करती। मम्मी–डैडी को आपसी तनाव के बावजूद सिल्वर जुबली मनाते देख उसका मन आक्रोश व घृणा से भर जाता है। साथी साधन के साथ घर छोड़ कर एक होटल में रहने लगती है। वहाँ अपने अदम्य साहस का परिचय देती है। होटल जीवन की आपत्तियाँ उसे मुहल्ले में आने को बाधित करती हैं। होटल से घर में आना वास्तव में एक प्रतीक है जो देवयानी को स्वछन्द विचरण व पाश्चात्य सभ्यता के प्रतीक होटल से पूर्वी सभ्यता व सामाजिक जीवन के प्रतीक मुहल्ले में ले आने का प्रतिनिधित्व करता है। यहाँ आकर उसे सामाजिक बनना पड़ता है – जिन सामाजिक मान्यताओं का उसने खण्डन किया था उसी सामाजिक संस्था विवाह के सन्धि–पत्र पर उसे

|e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 12, Issue 2, February 2023 ||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2023.1202085 |

हस्ताक्षर करने पड़ते हैं। यह घटना इस सत्य को उद्घाटित करती है कि जब तक आप उपरी हवा में हो तब तक ही आप अपने ख्यालों की दुनियाँ में उतर सकते हो। किन्तु एक न एक दिन तुम्हें यथार्थ के कटु–कंकरीट धरातल का स्पर्श अवश्य करना पड़ेगा। देवयानी के तलाशे गए स्वछन्दता के मूल्य हिम बन जाते हैं। इस खींझ को मिटाने के लिए विवाह का प्रमाण–पत्र मांगने वाले पिता से प्रतिशोध लेती है– ''मैं यह नाइटी उतार देती हूँ, दिखा दीजिए इसे लोगों को। शादी का इससे बड़ा प्रूफ अभी मेरे पास नहीं है।''[5] उसे पार्टी की, व्यक्ति की, समाज की बिल्कुल परवाह नहीं है। वह मात्र एक स्वतन्त्र चिड़िया है जिसे उड़ने के लिए खुला, नीला आसमान चाहिए और चुगने के लिए बिखरे ''दाने''। उसके लिए ज़िन्दगी चलने का नाम है, शादी के रूप में बंधकर रूक जाने का नहीं।''[6] होटल से घर, घर से कोठा, परिवर्तित होने पर भी वह असफल रहती है, लेकिन फिर भी झुकती नहीं। सब छोड़कर नए बिन्दुओं को तलाशने के लिए साधन से दूर होती है। युवा पीढ़ी विवाह एवं परिवार की संस्था को नकार भले ही न सकी हो लेकिन इसके प्रति सचेत अवश्य है।

औद्योगिक विकास कह लीजिए या पाश्चात्य प्रभाव लेकिन आज नारी की विचारधारा बदल गई है। वह मातृत्व को गौंण उपादान समझती है। मातृत्व की अपेक्षा नारीत्व उसके लिए अहम् है। काम इस सृष्टि का सार तत्व है, लेकिन वही सर्वस्त्र हो ऐसा नहीं है। संतानोत्पत्ति के सम्बन्ध में देवयानी का मत हैः ''साधन मैं एक कविता लिखूँ तो उससे मेरा वंश चलेगा या कोई मेरे विचारों से प्रभावित होकर मुझ जैसा बनना चाहे तो मेरा वंश होगा।''[7]

आज हर कोई एक–दूसरे से कट गया है, पारस्परिक प्रेम विश्वास तो मानों कहीं पंख लगाकर उड़ गया है। देवयानी आधुनिकता के लबादे को ओढ़कर शर्म–ह्या, आत्मीयता, माता–पिता के प्रति कर्त्तव्य को भूल जाने का ढोंग करती है– ''रूको साधन! वहाँ घर पर मम्मी मर चुकी है... ये डैडी नहीं है साधन, उनकी लाश है इसे जाने दो।''[8]

देवयानी नाटक में पुरूष का नाम भी प्रतीकात्मक है। ''साधन'' नाम उसकी पात्रगत विशेषता का बोधक है। देवयानी अपने निर्णयों, अपने विचारों को क्रियान्वित करने के लिए– ''साधन'' को साधन के रूप में अपनाती है। नित्य नए प्रयोग करने में ही उसकी ''बोल्डनेस'' है। वह नित्य नए प्रयोग करती है जिसे साधन अपनी अन्तिम तलाश मानकर स्वीकार करता है। यहाँ तक कि साधन को चार आने देकर देवयानी से चाय लेनी पड़ती है। दोनों पति–पत्नी की तरह साथ रहने का निर्णय करते हैं तो इसमें भी देवयानी का निर्णय है जिसे पूरा करने में भी उसका प्रिय ''साधन'' ही साधन बनता है।

|e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 12, Issue 2, February 2023 ||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2023.1202085 |

साधन : तो वह कौन सी शर्त थी कि हम दोनों ने साथ रहने का फैसला किया– होटल किराए से लेने की दिक्कत से बचना?

देवयानी : यही एक कारण नहीं है लेकिन यह भी एक कारण है और मेरे फैसले में तत्कालीन कारण यही है।

साधन : तो फिर यह ज़िन्दगी।

देवयानी : कहना चाहते हो कि नहीं चलेगी? उससे मुझको कोई फर्क नहीं पड़ता, जिस दिन नहीं चलेगी उसी दिन मैं तोड़ दूँगी।''[9]

नारी के परम्परित शोषित रूप को वह नकारती है ''मैंने नोचे खसौटे जाने के लिए जन्म नहीं लिया।''[10]

साधन एक साथ रहने को विवाह की संज्ञा से जोड़ना चाहता है। वह पार्टी देकर भीड़ की मंजूरी लेना चाहता है। वह प्रसन्न है किन्तु देवयानी जड़ हो जाती है। विवेच्य नाटक में दो भिन्न–भिन्न दृष्टियों की टकराहट है। कभी पूर्व पीढ़ी के माता–पिता औरं कभी एक ही पीढ़ी के साधन और देवयानी। पूर्व पीढ़ी यदि कुछ आस्था बिन्दुओं पर चलने के लिए तत्पर है तो नई पीढ़ी उन्मुक्त विचरण करना चाहती है। एक ही पीढ़ी के साधन और देवयानी में भी अन्तर है। साधन रिश्तों में गर्माहट चाहता है, उसे सम्बन्ध तोड़ने का दुःख है जबकि देवयानी को कतई नहीं है। यही देवयानी की ''बोल्डनैस?'' है। देवयानी को सम्बन्ध तोड़ने व साँप की केंचुली उतारने में कोई फर्क नहीं नज़र आता।

नई पीढ़ी अपने अनुभव पर जीना चाहती है। किसी के विचारों की बैसाखी पकड़ कर नहीं। वह उन्मुक्त उड़ान भरना चाहती है। पूर्व पीढ़ी के विचारों के बन्धन में स्वयं को जकड़ना नहीं चाहती। पूर्व पीढ़ी कहने की अभ्यस्त है और नई पीढ़ी सुनने को तैयार नहीं। दोनों कहने की मुद्रा में है सुनने की नहीं। ''मैं नफरत करती हूँ साधन इन सबसे और मेरा सारा विद्रोह तुम्हारे कथोपकथनों के खिलाफ है...। ''पहले ही दिन मुझे लग गया था कि मैंने डैडी को छोड़कर तुम्हें नहीं पाया है, उपदेशक बदल लिया है।''[11]

क्या आज की नारी उन्मुक्त विचरण को ही आधुनिकता मानती है? क्या मात्र सैक्स भरी ज़िन्दगी जीना ही नारी स्वातन्त्र्य का सही मूल्य है? क्या वह जिम्मेदारियों के बोझ से बचना चाहती है, क्या वह एक सामाजिक प्राणी बनने से इन्कार करना चाहती है, क्या वह भोग की स्वतन्त्रता चाहती है या अपने व्यक्तित्व को उभारने का अवसर? ''देवयानी का कहना है'' में नारी की बदलती हुई भूमिका को देखकर ये

|e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |
|| Volume 12, Issue 2, February 2023 ||
| DOI:10.15680/IJIRSET.2023.1202085 |

प्रश्न उभरते हैं। देवयानी छठे दशक की सावित्री के पश्चात् किन विकास पड़ावों से गुज़रती है। डॉ. लाम्बा के शब्दों में: ''देवयानी छठे दशक के नाटकों से आगे बढ़कर किसी भी व्यक्ति से जुड़ना नहीं चाहती अपितु उन्मुक्त यौनाचार के धरातल पर नित्य नए आस्वादन को तलाशती है। वह सपाट घर और तर्क हीन कमरे चाहती है। वह माँ, पत्नी, देवी सम्बन्धों को नकार कर वैध–अवैध से ऊपर उठकर हज़ार दाग वाली चुनरी ओढ़कर भीड़ में से गुज़रती हुई रोशनी की तलाश करती है। हालांकि यौवन और आग के खेल में हर घड़ी झुलसने का खतरा है।''[12]

ग्रंथ–सूची

1. डॉ. शान्ता लाम्बा, हिन्दी के समकालीन प्रमुख नाटकों के विभिन्न आयाम, पृ. 53
2. जैनेन्द्रः काम प्रेम और परिवार, पृ. 39
3. रमेश बक्षः देवयानी का कहना है, पृ. 87
4. वही, पृ. 15
5. वही, पृ. 30
6. डॉ. शान्ता लाम्बा, हिन्दी के समकालीन प्रमुख नाटकों के विभिन्न आयाम, पृ. 90
7. रमेश बक्षः देवयानी का कहना है, पृ. 89
8. वही, पृ. 104
9. वही, पृ. 22
10. वही, पृ. 84
11. वही, पृ. ....
12. डॉ. शान्ता लाम्बा, हिन्दी के समकालीन प्रमुख नाटकों के विभिन्न आयाम, पृ. 50

INNO SPACE
SJIF Scientific Journal Impact Factor
Impact Factor: 8.118

doi crossref

ISSN INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

निस्केयर NISCAIR

INTERNATIONAL JOURNAL OF INNOVATIVE RESEARCH

IN SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

9940 572 462 6381 907 438 ijirset@gmail.com

Scan to save the contact details

www.ijirset.com